गेहूँ में पीला रतुआ
व
करनाल बंट के लक्षण एवं प्रबन्धन

2024-2025

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला-171005
एवं
चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय
पालमपुर-176062

पीला रतुआ

हिमाचल प्रदेश में पीला रतुआ (येलो रस्ट या स्ट्राइप रस्ट) गेहूँ का प्रमुख रोग है। यह रोग प्रदेश में दिसम्बर के मध्य से लेकर जनवरी के पहले पखवाड़े तक प्रकट होता है तथा फसल पर मार्च के अंत तक फैलता रहता है। रोग का प्रकोप अधिक ठण्ड और नमी वाले मौसम में ज्यादा होता है।

लक्षण

रोग के लक्षण पीले रंग की धारियों के रूप में पत्तियों पर दिखाई देते हैं, जिनमें से पिसी हुई हल्दी जैसा पीला चूर्ण निकलता है और रोग की गम्भीर अवस्था में जमीन पर भी गिरा हुआ दिखाई देता है। अधिक बीमारी वाले खेत में घूमने पर कपड़े भी पीले हो जाते हैं। यदि यह रोग कल्ले निकलने की अवस्था में या इससे पहले आ जाए तो फसल को भारी हानि होती है। पीली धारियां मुख्यतः पत्तियों पर ही पाई जाती हैं परन्तु रोग की व्यापक दशा में पत्तियों के आवरण, तनों एवं बालियों पर भी देखी जा सकती हैं। रोग से प्रभावित पत्तियां शीघ्र ही सूख जाती हैं। इस रोग की वजह से सिकुड़े दाने पैदा होते हैं जिससे पैदावार में भारी कमी आती है। तापमान बढ़ने पर मार्च के अंत से पत्तियों की पीली धारियां काले रंग में बदल जाती हैं।

करनाल बंट

- गेहूँ की बालियों में फूल आने के समय पर वातावरण में अधिक नमी या रूक–रूक कर बारिश होने पर, करनाल बंट का संक्रमण बढ़ जाता है। इसके कारण पौधे की कुछ बालियों में व एक बाली में कुछ दाने आंशिक रूप से काले चूर्ण में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रबन्धन

- हमेशा रोग रोधी किस्मों का ही प्रयोग करें।
- क्षेत्र में अनुमोदित किस्मों की ही बुआई करें तथा ध्यान रखें कि दूसरे क्षेत्रों के लिए अनुमोदित किस्मों को न उगाएं।
- अनुमोदित किस्मों की बुआई समय अनुसार करें।
- फसल का दिसम्बर माह के अन्त से ध्यानपूर्वक नियमित निरीक्षण करें। पेड़ों के आस पास उगाई गई फसल पर विशेष ध्यान दें।
- फसल पर इस रोग के लक्षण दिखने पर दिसम्बर के अंत से लेकर फरवरी के आरम्भ तक प्रॉपीकोनाज़ोल नामक कवकनाशी दवाई के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। यदि रोग इस से पहले या बाद में दिखाई दे, तो भी दवाई का छिड़काव कर दें।
- छिड़काव के लिए प्रॉपीकोनाज़ोल 25 ई सी का 0.1 प्रतिशत घोल बनाने के लिए एक कनाल के लिए 30 मि. ली. दवाई 30 लीटर पानी में या एक बीघे के लिए 60 मि. ली. दवाई 60 लीटर पानी (1 मि. ली./1 लीटर पानी) में घोलकर छिड़काव करें तथा स्टिकर का इस्तेमाल अवश्य करें।
- रोग के प्रकोप तथा फैलाव को देखते ही दूसरा छिड़काव 15 से 20 दिन के अन्तराल पर करें।
- करनाल बंट के प्रबन्धन के लिए प्रॉपीकोनाजोल 25 ई. सी. एक कनाल के लिए 30 मि. ली. दवाई 30 लीटर पानी (1 मि. ली./1 लीटर पानी) में घोलकर, फसल में बूटिंग (बालियां निकलने से पहले) अवस्था पर तथा पौधों में 50 प्रतिशत बालियां निकलने पर छिड़काव करें।
- छिड़काव़ सही ढ़ंग से करें ताकि दवा पौधों के सभी भागों में अच्छी तरह से फैल जाए।
- छिड़काव के लिए पानी की उचित मात्रा का प्रयोग करें। अधिक या कम मात्रा का प्रयोग करने से छिड़काव का पूर्ण लाभ नहीं मिल पाएगा।
- छिड़काव दोपहर बाद करें और यदि छिड़काव के बाद दो घण्टे के अन्दर बारिश आ जाती है तो मौसम ठीक होने पर दोबारा छिड़काव करें।

विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुमोदित पीला रतुआ रोधी किस्में :

निचले क्षेत्र (1000 मी. से नीचे वाले क्षेत्र)

अगेती: एच पी डब्ल्यू 360, एच एस 542, डब्ल्यू एच 1270, डी बी डब्ल्यू 303, डी बी डब्ल्यू 327, डी बी डब्ल्यू 332

समय पर: एच पी डब्ल्यू 368, एच एस 562, डब्ल्यू एच 1184, पी बी डब्ल्यू 723, पी बी डब्ल्यू 660, डब्ल्यू बी 2, एच पी बी डब्ल्यू 01 (पी बी डब्ल्यू 1 ज़िंक), एच डी 3226, यू पी 2784, डी बी डब्ल्यू 222, डब्ल्यू एच 771, उन्नत पी बी डब्ल्यू 343, डी बी डब्ल्यू 187, एच आई 1620, एच एस 1628, एच डी 3237, एच डी 3249, डी बी डब्ल्यू 252, डी बी डब्ल्यू 296, वी एल 2041

पछेती: यू पी 2425, डी बी डब्ल्यू 71, डब्ल्यू एच 1124, एच पी डब्ल्यू 373, पी बी डब्ल्यू 752, पी बी डब्ल्यू 757, पी बी डब्ल्यू 771, एच डी 3298, जे के डब्ल्यू 261, एच डी 3271, एच आई 1621

मध्यवर्ती क्षेत्र (1001 से 1500 मी.)

अगेती: एच पी डब्लयू 360, एच एस 542

समय पर: एच पी डब्लयू 368, एच एस 562, वी एल 2041

पछेती: एच पी डब्लयू 373

ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र (1501 से 2500 मी.)

एच एस 542, एच पी डब्ल्यू 368, हिम प्रथम

बहुत ऊँचे / बर्फानी क्षेत्र (2500 मीटर से ऊपर)

एच एस 490, हिम प्रथम, एच पी डब्लयू 373, सप्तधारा

संकलन

डॉ. आर. के. कपिला, डॉ. डी. के. बन्याल व डॉ. विजय राणा

सम्पादन एवं प्रकाशन :

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

शिमला – 171005, दूरभाष – 0177 – 283 0162 / 283 0174 / 283 0618

फैक्स – 0177 – 283 0612

एवं

चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय

पालमपुर – 176062, दूरभाष व फैक्स : – 01894 – 23 0406